ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

राजस्थान में पशुधन संवर्धन एवं विकास

Dr. Panmal Pahariya

Associate Professor, Dept. of Geography, Govt. College, Tonk, Rajasthan, India

सार

राजस्थान में पशु-सम्पदा का विशेष रूप से आर्थिक महत्त्व माना गया है। राज्य के कुल क्षेत्रफल का 61 प्रतिशत मरुस्थलीय प्रदेश है, जहाँ जीविकोपार्जन का मुख्य साधन पशुपालन ही है। इससे राज्य की शुद्ध घरेलू उत्पत्ति का महत्त्वपूर्ण अंश प्राप्त होता है। राजस्थान में देश के पशुधन का लगभग 10.60 प्रतिशत था, जिसमें भेड़ों का 25 प्रतिशत अंश पाया जाता है। भारतीय संदर्भ में पशुधन के महत्त्व को दर्शाने के लिए नीचे कुछ आँकड़े दिए गए है, जो इस प्रकार हैं-

1. राजस्थान में देश के कुल दुग्ध उत्पादन का अंश लगभग 12.73 प्रतिशत होता है।
2. राज्य के पशुओं द्वारा भार-वहन शक्ति 35 प्रतिशत है।
3. भेड़ के माँस में राजस्थान का भारत में अंश 30 प्रतिशत है।
4. ऊन में राजस्थान का भारत में अंश 40% है। राज्य में भेंड़ों की संख्या समस्त भारत की संख्या का लगभग 25 प्रतिशत है।

परिचय

राजस्थान की अर्थव्यवस्था के बारे में यह कहा जाता है कि यह पूर्णत कृषि पर निर्भर करती है तथा कृषि मानसून का जुआ मानी जाती है। इस स्थिति में पशुपालन का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। राजस्थान में पशुधन का महत्त्व निम्नलिखित तथ्यों से देखा जा सकता है-

राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान - राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पशुधन का योगदान लगभग 10% प्रतिशत है।निर्धनता उन्मूलन - निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम में भी पशु-पालन की महत्ता स्वीकार की गई है। समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम में गरीब परिवारों को दुधारु पशु देकर उनकी आमदनी बढ़ाने का प्रयास किया गया था। लेकिन इसके लिए चारे व पानी की उचित व्यवस्था करनी होती है तथा लाभान्वित परिवारों को बिक्री की सुविधाएं भी प्रदान करनी होती हैं।[1]

रोज़गार-सृजन - पशुपालन में ऊँची आमदनी व रोज़गार की संभावनाएँ निहित हैं। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाकर आमदनी में वृद्धि की जा सकती है। राज्य के शुष्क व अर्द्ध-शुष्क भागों में कुछ परिवार काफ़ी संख्या में पशुपालन करते है और इनका यह कार्य वंश-परम्परागत चलता आया है। इन क्षेत्रों में शुद्ध घरेलू उत्पत्ति का ऊँचा अंश पशुपालन से सृजित होता है। इसलिए मरु अर्थव्यवस्था मूलतः पशु-आधारित है।

डेयरी विकास - पशुधन की सहायता से ग्रामीण दुग्ध उत्पादन को शहरी उपभोक्ताओं के साथ जोड़कर शहरी क्षेत्र की दुग्ध आवश्यकता की आपूर्ति तथा ग्रामीण क्षेत्र की आजीविका की व्यवस्था होती है। राजस्थान देश के कुल दुग्ध उत्पादन का 10 प्रतिशत उत्पादन करता है। राज्य में 1989-1990 में 42 लाख टन दूध का उत्पादन हुआ, जो बढ़कर 2003-2004 में 80.5 लाख टन हो गया।[2]

परिवहन का साधन - राजस्थान में पशुधन में भार वहन करने की अपार क्षमता है। बैल, भैंसे, ऊँट, गधे, खच्चर आदि कृषि व कई परियोजनाओं में बोझा ढोने व भार खींचने का काम करते हैं। देश की कुल भार वहन क्षमता का 35 प्रतिशत भाग राजस्थान के पशु वहन करते है। देश में रेल व ट्रकों द्वारा कुल 30 करोड़ टन माल की ढुलाई होती है, जबकि बैलगाडियों से आज भी 70 करोड़ टन माल ढोया जाता है।

खाद की प्राप्ति - पशुपालन के द्वारा कृषि के लिए खाद की प्राप्ति भी होती है। इस समय जानवरों के गोबर से निर्मित "वर्मी कम्पोस्ट" खाद्य अत्यधिक प्रचलन में है।[3]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

राजस्थान राज्य में विभिन्न प्रकार के पशु पाए जाते हैं, जिनकी संख्या को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है-

2016 में विभिन्न प्रकार के पशुओं की संख्या-

- गौवंश अथवा गाय-बैल - 1.33 करोड़
- भैंस जाति - 1.29 करोड़
- भेड़ जाति - 90.79 लाख
- बकरी जाति - 2.16 करोड़
- शेष ऊँट, घोड़े, गधे, सूअर आदि - 10 लाख[4]

इस प्रकार संख्या की दृष्टि से पशुओं में गाय-बैल तथा भेड़-बकरी प्रमुख हैं। राजस्थान में उपलब्ध विभिन्न जानवरों, जैसे- गाय, बकरी, भेंड आदि का वर्णन निम्नलिखित है-

(1.) गाय - राजस्थान में गाय पशुपालन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। कुल पशु-सम्पदा में गौवंश का 24.4 प्रतिशत है। इसकी निम्नलिखित नस्लें राजस्थान में पाई जाती हैं-

1. नागौरी
2. कांकरेज
3. थारपारकर
4. राठी

(2.) भेंड़ - देश की कुल भेंडों की लगभग 10.64[5]

प्रतिशत राजस्थान में पाई जाती हैं। राज्य के लगभग 2 लाख परिवार पशुपालन कार्यों में संलग्न हैं। यहाँ पाई जाने वाली भेड़ों की प्रमुख नस्लें इस प्रकार हैं–

1. जैसलमेरी भेड़
2. नाली भेड़
3. मालपुरी भेड़
4. मगरा भेड़
5. पूगल भेड़
6. मारवाड़ी भेड़
7. शेखावाटी भेड़ या चोकला[6]
8. सोनाडी भेड़

विचार-विमर्श

पशुधन विकास की समस्याएँ

मानसून की अनिश्चिता - राजस्थान में प्राय: सूखे की समस्या रहती है। इसी वजह से पशुओं को पर्याप्त मात्रा में चारा उपलब्ध नहीं हो पाता। योजना एवं समन्वय का अभाव- सरकार अभी तक इस क्षेत्र के विकास के लिए एक सम्पूर्ण योजना का खाका तैयार नहीं कर पायी है, तथा समन्वय का अभाव देखा गया है। पशु स्वास्थ्य योजना - अक्सर देखा जाता है कि किसी एक बीमारी के कारण सभी पशु

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

उसकी चपेट में आ जाते हैं। इस स्थिति को समाप्त करने के लिए योजना एवं सुविधाओं का अभाव देखा गया है। पशु आधारित उद्योगों की कमी - राजस्थान में ऊन, दूध तथा चमड़ा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, परन्तु इन पर आधारित उद्योगों की राजस्थान में कमी होने से दूध, चमड़ा दूसरे राज्यों में निर्यात कर देने से राज्य को पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता है।[7]

राजस्थान में पशुधन का बेहरत प्रयोग हो सके और इससे अधिक से अधिक लाभ लिया जा सके, इसके लिए कई कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

गोपाल कार्यक्रम

पशुधन के विकास हेतु यह कार्यक्रम 1990-1991 में चालू किया गया था। इस गैर-सरकारी संगठन अथवा गांव के शिक्षित युवक (गोपाल) को उचित प्रशिक्षण देकर उसकी सेवाओं का उपयोग किया जाता है। इसमें विदेशी नस्ल का उपयोग बढ़ाने के लिए गोपाल को क्रॉस प्रजनन के लिए कृत्रिम गर्भाधान की विधि का प्रशिक्षण दिया जाता है। एक क्षेत्र के बेकार साड़ों को पूर्णतः बधिया दिया जाता है। पशु-पालकों को इस बात का प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे अपने पशुओं को स्टॉल पर किस प्रकार खिलावें और सदैव बाहर चरने की विधि पर आश्रित न हों।[8]

भेड़ प्रजनन कार्यक्रम

राज्य में ऊन व मांस के उत्पादन में गुणात्मक व मात्रात्मक सुधार करने के लिए भेड़ प्रजनन कार्य में सुधार के व्यापक प्रयास किए गए हैं। क्रॉस-प्रजनन कार्यक्रम नाली, चोकला,सोनाडी व मालपुरी नस्लों पर लागू किया गया है। इसमें कृत्रिम गर्भाधान के जरिए भेड़ों की नस्ल सुधारी जाती है। इसके अलावा चयनित प्रजनन कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

विपणन व्यवस्था

पशुपालकों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त हो, इसके लिए एक तरफ़ पशुओं के क्रय-विक्रय हेतु पशु मेला लगाये जाते हैं। दूसरी तरफ़ दूध को बिना मध्यस्थों के सीधा उपभोक्ता तक पहुँचाने के लिए दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों की स्थापना की गयी है। राज्य में पशु मेलों का आयोजन ग्राम पंचायत, नगरपालिका एवं पंचायत समितियों के माध्यम से किये जाता है। राज्य में वर्तमान में 50 पशु मेले लगते हैं, जिनमें 10 मेले राज्य स्तरीय प्रसिद्ध पशु मेले, पशुपालन विभाग द्वारा आयोजित किये जाते है।[9]

पशु चिकित्सा

राज्य में पशुओं की बीमारियों से रक्षा एवं रोकथाम के लिये नये चिकित्सालय खोले गये हैं, जहाँ 1951 में 147 चिकित्सालय थे। 2001-2002 में राज्य में 12 पशु क्लिनिक्स, 22 प्रथम ग्रेड के पशु चिकित्सालय, 1386 पशु चिकित्सालय, 285 पशु औषधालय तथा 1720 उपकेन्द्र कार्यरत हैं। इसके अलावा 34 ज़िला रोग प्रयोगशालाएँ राज्य में कार्यरत हैं। पशुपालकों को उनके घर पर ही पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने हेतु उपखण्ड स्तर पर 8 चल पशु चिकित्सा इकाइयाँ गठित करने की योजना बनाई है।[10]

एकीकृत पशु विकास कार्यक्रम

8वीं योजना के प्रारम्भ में यह जयपुर एवं बीकानेर संभाग में चालू किय गया था, परन्तु वर्तमान में यह कार्यक्रम प्रदेश के कोटा, जयपुर, बीकानेर, अजमेर, उदयपुर संभागों के 21 ज़िलों में लागू हैं, जहाँ 749 उपकेन्द्र स्थापित किये गये हैं। इस योजना में पशुओं के स्वास्थ्य के अतिरिक्त कृत्रिम गर्भाधान, बेकार पशुओं का बन्ध्याकरण तथा उन्नत किस्म के चारे के बीजों का वितरण का उद्देश्य शामिल है।[11]

पशुपालन व अनुसंधान

राज्य में द्वितीय पंचवर्षीय योजना में दो पशु चिकित्सा महाविद्यालय बीकानेर तथा जयपुर में स्थापित किये गये हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने बीकानेर एवं सूरतगढ़ में भेड़ अनुसंधान केन्द्र स्थापित किये हैं। जोधपुर में ऊन एवं भेड़ प्रशिक्षण स्कूल स्थापित किया गया है। विश्व बैंक की सहायता से जामडोली में पशु चिकित्सकों एवं अधिकारियों को विशेष तकनीकी प्रशिक्षण हेतु राजस्थान पशु-धन प्रबंध संस्थान का भवन निर्माण कार्य करवाया है।[12]

ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम 1970 में शुरू हुआ था। ऑपरेशन फ्लड ने डेरी उद्योग से जुड़े किसानों को उनके विकास को स्वयं दिशा देने में सहायता दी है, उनके द्वारा सृजित संसाधनों का नियंत्रण उनके हाथों में दिया है। राष्ट्रीय दुग्ध ग्रिड देश के दूध उत्पादकों को 700 से

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

अधिक शहरों और नगरों के उपभोक्ताओं से जोड़ता है। इसके फलस्वरूप दूध के मूल्यों में होने वाले मौसमी और क्षेत्रीय परिवर्तन काफी कम हो गए, साथ ही साथ यह सुनिश्चित हुआ कि उत्पादकों को नियमित आधार पर पारदर्शी तरीके से उचित बाजार मूल्य मिलता रहे।

ऑपरेशन फ्लड की आधारशिला ग्राम दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां हैं। ये समितियां उत्पादकों से दूध खरीदती हैं, उन्हें जरूरी जानकारी और सेवाएं देती हैं और उन्हें आधुनिक प्रबंधन और प्रौद्योगिकी सुलभ कराती हैं। ऑपरेशन फ्लड के उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल थाः

- दूध उत्पादन में वृद्धि ("दूध की बाढ़")
- ग्रामीण क्षेत्र की आय में वृद्धि
- उपभोक्ताओं को उचित दाम पर दूध उपलब्ध कराना

कार्यक्रम कार्यान्वयन

ऑपरेशन फ्लड का अमलीकरण तीन चरणों में किया गया था।

चरण I

ऑपरेशन फ्लड चरण I (1970 से 1980) का वित्तपोषण विश्व खाद्य कार्यक्रम के अंतर्गत यूरोपियन संघ और फिर ईईसी द्वारा उपहार में मिले स्किम्ड मिल्क पाउडर तथा बटर ऑयल की बिक्री से किया गया। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने इस कार्यक्रम की योजना बनाई और ईईसी की सहायता की बारीकियों पर बातचीत की।

प्रथम चरण के दौरान ऑपरेशन फ्लड ने देश के 18 प्रमुख दुग्ध शेड़ों को देश के चार मुख्य महानगरों – दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई के उपभोक्ताओं के साथ जोड़ा।

चरण II

ऑपरेशन फ्लड के चरण II (1981-85) में प्रमुख दुग्ध केंद्रों की संख्या 18 से बढ़कर 136 हो गई। दूध 290 नगरों के बाजारों में उपलब्ध होने लगा। 1985 के अंत तक 43,000 आत्मनिर्भर ग्राम दूध सहकारी समितियों की व्यवस्था बन चुकी थी, जिसमें 42.50 लाख दूध उत्पादकों का जुड़ जाना एक हकीकत बन गया था।घरेलू पाउडर उत्पादन जो योजना के पूर्व वर्ष में 22,000 टन था वह 1989 में बढ़ कर 1,40,000 टन हो गया। यह सारी वृद्धि उन डेरियों से हुई जिनकी स्थापना ऑपरेशन फ्लड के दौरान हुई थी। इस प्रकार, ई ई सी से प्राप्त उपहारों और विश्व बैंक से प्राप्त ऋणों से आत्मनिर्भर बनने मे सहायता मिली। उत्पादक सहकारी समितियों द्वारा दूध की सीधी बिक्री में कई लाख लीटर प्रतिदिन की वृद्धि हो गई।

चरण III

ऑपरेशन फ्लड के चरण III (1985 से 1996) ने डेरी सहकारिताओं को अधिक मात्रा में दूध की खरीदी और बिक्री के लिए अपेक्षित बुनियादी ढ़ांचे के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण हेतु सक्षम बनाया । सहकारी सदस्यों की शिक्षा की सघन व्यवस्था के साथ ही उनके लिए प्राथमिक पशु- स्वास्थ्य देखभाल सेवा, आहार एवं कृत्रिम गर्भाधान सुविधाओं का विस्तार किया गया।

ऑपरेशन फ्लड के चरण III ने भारत के दूध सहकारी आन्दोलन को मजबूत किया जिसमें द्वितीय चरण II में गठित 42,000 वर्तमान सहकारी समितियों में 30,000 नई डेरी सहकारिताएं जुड़ीं। महिला दुग्ध सहकारी समितियों व महिला सदस्यों की संख्या में महत्त्वपूर्ण वृद्धि के साथ 1988-89 में दूध शेडों की संख्या 173 तक पहुंच गई।

तृतीय चरण में पशु स्वास्थ्य और पशु पोषण में अनुसंधान एवं विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। नवीन खोजों जैसे थिलेरियोसिस के टीके, बायपास प्रोटीन आहार और यूरिया-सीरा खनिज ब्लाक, सभी ने दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने में योगदान दिया।

प्रारंभ से ही ऑपरेशन फ्लड की एक सामान्य डेरी कार्यक्रम से कहीं अधिक विशाल कार्यक्रम के रूप में अभिकल्पना और कार्यान्वयन किया गया था। डेरी उद्योग को विकास के साधन के रूप में देखा गया था जिसमें लाखों ग्रामवासियों को रोजगार और नियमित आय के अवसर मिले । "ऑपरेशन फ्लड को ग्रामीण विकास परिदृश्य को साकार करने वाले बीस वर्षीय प्रयोग के रूप में देखा जा सकता है ।"

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

परिणाम

भारतीय राज्य राजस्थान में सभी जिलों और ग्रामीण स्तर पर लगभग 250 से अधिक पशु मेला का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। कला, संस्कृति, पशुपालन और पर्यटन की दृष्टि से यह मेले अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। देश विदेश के हजारों लाखों पर्यटक इसके माध्यम से लोक कला एवं ग्रामीण संस्कृति से रूबरू होते हैं। राज्य स्तरीय पशु मेलों के आयोजनों में नगरपालिका और ग्राम पंचायतों की ओर से पशुपालकों को पानी, बिजली पशु चिकित्सा व टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। सरकार की ओर से इन मेलों में समय-समय पर प्रदर्शनी और अन्य ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है। राजस्थान राज्य स्तरीय पशु मेला में अधिकांश मेले लोक देवी देवताओं एवं महान पुरुषों के नाम से जुड़े हुए हैं पशुपालन विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले राज्य स्तरीय पशु मेले कुछ इस प्रकार है।[13]

श्री रामदेव पशु मेला-नागौर

इस मेले के बारे में प्रारंभ में प्रचलित मान्यता है कि मानसर गांव के समुद्र भू-भाग पर रामदेव जी की मूर्ति स्वतः ही अद्भुत हुई। श्रद्धालुओं ने यहां एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया है और यहां मेले में आने वाला पशुपालक इस मंदिर में जाकर अपने पशुओं के स्वास्थ्य की मनौती मांग ही खरीद [2] फरोख्त किया करते हैं। आजादी के बाद से मेले की लोकप्रियता को देखकर राज्य के पशु पालन विभाग [3] ने इसे राज्यस्तरीय पशु मेलों में शामिल किया तथा फरवरी १९५८ से पशुपालन विभाग इस मेले का संचालन कर रहा है। यह पशु मेला प्रतिवर्ष नागौर शहर से ५ किलोमीटर दूर मानसर गांव में माघ शुक्ल १ से माघ शुक्ल १५ तक लगता है। मारवाड़ के लोकप्रिय नरेश स्वर्गीय श्री उम्मेद सिंह जी को इस मेले का प्रणेता माना जाता है। इस मेले में नागौरी नस्ल के बैलों की बड़ी मात्रा में बिक्री होती है। [14]

श्री मल्लीनाथ पशु मेला, तिलवाड़ा-बाड़मेर

यह पशु मेला वीर योद्धा रावल मल्लिनाथ की स्मृति में आयोजित होता है। विक्रम संवत १४३१ में मलीनाथ के गद्दी पर आसीन होने के शुभ अवसर पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया था जिसमें दूर-दूर से हजारों लोग शामिल हुए। आयोजन की समाप्ति पर लौटने के पहले इन लोगों ने अपनी सवारी के लिए ऊंट, घोड़ा और रथों के सुडौल बैलों का आपस में आदान-प्रदान किया तथा यहीं से इस मेले का उद्भव हुआ। इस मेले का संचालन पशुपालन विभाग ने सन १९५८ में संभाला। यह मेला प्रतिवर्ष चैत्र बुदी ग्यारस से चैत्र सुदी ग्यारस तक बाड़मेर जिले के पचपदरा तहसील के तिलवाड़ा गांव में लूनी नदी पर लगता है। इस पशु मेले में सांचोर की नस्ल के बैलों के अलावा बड़ी संख्या में मालानी नस्ल के घोड़े और ऊंठ की भी बिक्री होती है।[15]

श्री बलदेव पशु मेला, मेड़ता सिटी-नागौर

यह पशु मेला मेड़ता सिटी में चैत्र सुदी १ से चैत्र सुदी १५ तक आयोजित होता है। इस मेले में अधिकांशतः नागौरी बैलों की बिक्री होती है। [11] यह पशु मेला प्रसिद्ध किसान नेता श्री बलदेव राम जी मिर्धा की स्मृति में अप्रैल १९४७ से राज्य का पशुपालन विभाग द्वारा संचालित किया जा रहा है।

श्री वीर तेजाजी पशु मेला परबतसर नागौर

राजस्थान में यह पशु मेला लोक देवता वीर तेजाजी की याद में भाद्र शुक्ल दशमी (तेजा दशमी) को भरता है। पशुपालन विभाग ने इस मेले की बागडोर [13] सन १९४७ में अपने हाथ में ली थी। यह पशु मेला आमदनी के लिए प्रदेश का सबसे बड़ा मेला है। विक्रम संवत १७९१ में जोधपुर के महाराजा अजीत सिंह ने यहां तेजाजी का देवल बनाकर एवं उनकी मूर्ति स्थापित कर इस पशु मेले की शुरुआत की थी। यह मेला नागौरी बैलों एवं बीकानेरी ऊंटों के क्रय -विक्रय के लिए प्रसिद्ध है।[16]

महाशिवरात्रि पशु मेला करौली

करौली जिले में भरने वाला यह पशु मेला राज्य स्तरीय पशु मेलों में से एक है। इस पशु मेले का आयोजन प्रतिवर्ष [15] फाल्गुन कृष्णा में किया जाता है। महाशिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होने से इस पशु मेले का नाम शिवरात्रि पशु मेला पड़ गया है। इस मेले के आयोजन का प्रारंभ रियासत काल में हुआ था। मेले में हरियाणवी नस्ल के पशुओं की बिक्री बहुत होती है। राजस्थान के [16] अलावा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के व्यापारी भी इस मेले में आते हैं। पशु मेला समाप्त हो जाने के करीब १ सप्ताह बाद इसी स्थल पर माल मेला भरता

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

है जिसमें करौली कस्बे के आस-पास के व्यापारी वर्ग अपनी दुकानें लगाते हैं और ग्राम ग्रामीण क्षेत्र के लोगों द्वारा इस मेले में आवश्यक वस्तुओं को खरीदा जाता है और चुना जाता है कि इस मेले में रियासत के समय जवाहरात की दुकानें भी लगाई जाती थीं।[17]

गोमती सागर पशु मेला-झालावाड़

झालावाड़ जिले के [18] झालरापाटन कस्बे में यह पशु मेला प्रतिवर्ष वैशाख सुदी तेरस से ज्येष्ठ बुदी पंचम तल गोमती सागर की [19] पवित्रता पर बढ़ता है यह पशु मेला हाड़ौती अंचल का सबसे बड़ा एवं प्रसिद्ध मेला है। पशुपालन विभाग मई १९५९ से इस पशु मेले को आयोजित कर रहा है।

श्री गोगामेड़ी पशु मेला-हनुमानगढ़

गोगामेड़ी राजस्थान के पांच पीरों में से एक वीर तथा लोक देवता गोगा जी का समाधि स्थल है यह वर्तमान में हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील में है यहां [22] प्रतिवर्ष श्रावण सुदी पूनम से भादवा सुदी पूनम तक पशु मेले का आयोजन होता है इस मेले के संचालन का काम पशुपालन विभाग द्वारा अगस्त १९५९ से हो रहा है।[14]

श्री जसवंत प्रदर्शनी एवं पशु मेला-भरतपुर

भरतपुर रियासत के स्वर्गीय महाराजा जसवंत सिंह की याद में इस प्रदर्शनी तथा पशु मेले का आयोजन होता है प्रतिवर्ष यह पशु मेला आसोज सुदी पंचम से आसोज सुदी १४ तक लगता है इस मेले में हरियाणा नस्ल के बैलों का कई अभिक्रिया होता है अक्टूबर १९५८ से पशुपालन विभाग पशु मेले को आयोजित कर रहा है।

आय की दृष्टि से सबसे बड़ा पशु मेला है।[13]

श्री चंद्रभागा पशु मेला-झालावाड़

झालावाड़ जिले के झालरापाटन कस्बे [27] में यह पशु मेला हर साल कार्तिक सुदी ग्यारस से मिगसर बदी पंचम तक चलता है इस पशु मेले में मालवी नस्ल के बैलों की भारी तादाद में खरीद होती है पशुपालन विभाग द्वारा इस मेले का संचालन नवंबर १९५८ से हो रहा है।

पुष्कर पशु मेला-अजमेर

अजमेर से ११ कि॰मी॰ दूर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर है। यहां पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। हजारों हिन्दू लोग इस मेले में आते हैं। व अपने को पवित्र करने के लिए पुष्कर झील में स्नान करते हैं। भक्तगण एवं पर्यटक श्री रंग जी एवं अन्य मंदिरों के दर्शन कर आत्मिक लाभ प्राप्त करते हैं।[12]

राज्य प्रशासन भी इस मेले को विशेष महत्त्व देता है। स्थानीय प्रशासन इस मेले की व्यवस्था करता है एवं कला संस्कृति तथा पर्यटन विभाग इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयाजन करते हैं।

इस समय यहां पर पशु-मेला भी आयोजित किया जाता है, जिसमें पशुओं से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम भी किए जाते हैं, जिसमें श्रेष्ठ नस्ल के पशुओं को पुरस्कृत किया जाता है। इस पशु मेले का मुख्य आकर्षण होता है।[10]

भारत में किसी पौराणिक स्थल पर आम तौर पर जिस संख्या में पर्यटक आते हैं, पुष्कर में आने वाले पर्यटकों की संख्या उससे कहीं ज्यादा है। इनमें बड़ी संख्या विदेशी सैलानियों की है, जिन्हें पुष्कर खास तौर पर पसंद है। हर साल कार्तिक महीने में लगने वाले पुष्कर ऊंट मेले ने तो इस जगह को दुनिया भर में अलग ही पहचान दे दी है। मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन सा देखने को मिलता है। एक तरफ तो मेला देखने के लिए विदेशी सैलानी बड़ी संख्या में पहुंचते हैं, तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के तमाम इलाकों से आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने-अपने पशुओं के साथ मेले में शरीक होने आते हैं। मेला रेत के विशाल मैदान लगाया जाता है। ढेर सारी कतार की कतार दुकानें, खाने-पीने के स्टाल, सर्कस, झूले और न जाने क्या-क्या। ऊंट मेला और रेगिस्तान की नजदीकी है इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। लेकिन कालांतर में इसका स्वरूप विशाल पशु मेले का हो गया है। [11]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

निष्कर्ष

Central Arid Zone Research Institute की स्थापना जोधपुर में विश्व बैंक के सहयोग से की गई। काजरी संस्था ने मरुस्थलीय क्षेत्रों में अनेक किस्मों का विकास किया है। इसके अलावा जल प्रबंधन, पशुओं का नस्ल सुधार, वनारोपण,भू संरक्षण तकनीकों का विकास किया,जो बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई। ऑपरेशन फ्लड"- दुग्ध उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं में निकट संपर्क स्थापित करने तथा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 1970 में चलाया गया एक अभियान है। राजस्थान की प्रमुख गौवंश की नस्लें- राठी, कांकरेज, थारपारकर, नागौरी, सांचौरी, गिर, मालवी आदि।[15]

संदर्भ

1. "Breeds of Livestock". Department of Animal Science - Oklahoma State University. मूल से 24 दिसंबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2009-09-30.
2. ↑ http://dictionary.reference.com/browse/chattel Archived 2009-08-14 at the Wayback Machine चल-संपत्ति का उद्भव, अगस्त 15, 2009 को देखा गया
3. ↑ [1] Archived 2007-03-03 at the Wayback Machine, साइप्रस में बिल्ली का पालतूकरण, नेशनल ज्योग्राफिक.
4. ↑ "Oldest Known Pet Cat? 9500-Year-Old Burial Found on Cyprus". National Geographic News. 2004-04-08. मूल से 3 मार्च 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-03-06.
5. ↑ Muir, Hazel (2004-04-08). "Ancient remains could be oldest pet cat". New Scientist. मूल से 16 अक्तूबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-11-23.
6. ↑ Walton, Marsha (अप्रैल 9, 2004). "Ancient burial looks like human and pet cat". CNN. मूल से 22 दिसंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-11-23.
7. ↑ नौर्दर्न डेली लीडर, 20 मई 2010, कुत्ते ने 30 भेड़ों को क्षति पहुंचाई (तथा उन्हें मार दिया), पृष्ठ 3, रूरल प्रेस
8. ↑ दि टाइम्स: भेड़ की हत्या के लिए कुत्तों को जब्त किया गया Archived 2012-01-11 at the Wayback Machine 2010-6-2 को देखा गया
9. ↑ "एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका - मूल पोषक तत्व एवं एडिटिव्स » एंटीबायोटिक दवायें व अन्य विकास उत्प्रेरक". मूल से 19 अक्तूबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 मई 2011.
10. ↑ "लाइवस्टॉक्स लौंग शैडो - इन्वयारन्मेंटल इशूज़ एंड ऑप्शंस." एफएओ होम: एफएओ. स्रोत: संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन, 2006. वेब. 16 जनवरी 2011. http://www.fao.org/docrep/010/a0701e/a0701e00.HTM Archived 2008-07-26 at the Wayback Machine
11. ↑ "ग्लोबल मीथेन सम्बन्धी पहल - तथ्य पत्रक." वैश्विक मीथेन पहल. वेब. 4 फ़रवरी 2011. http://www.globalmethane.org/gmi Archived 2011-03-12 at the Wayback Machine
12. ↑ पिमेंटेल, डेविड. "कॉर्नेल विज्ञान समाचार: पशुधन उत्पादन." कार्नेल क्रॉनिकल ऑनलाइन. 7 अगस्त 1997. वेब. 16 फ़रवरी 2011. http://www.news.cornell.edu/releases/aug97/livestock.hrs.html Archived 2013-03-12 at the Wayback Machine
13. ↑ पेलेशियर, नेथन और पीटर टाइडमर्स. "पशुधन उत्पादन की संभावित वैश्विक पर्यावरण लागत का पूर्वानुमान 2000-2050." संयुक्त राज्य अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की कार्यवाही 107.43 (2010): 18371-8374. वेब ऑफ साइंस. वेब. 17 जनवरी 2011. http://www.pnas.org.offcampus.lib.washington.edu/content/107/43/18371
14. ↑ स्टार्मे, एलानौर. "लेवलिंग दि फील्ड - इशु ब्रीफ # 2 पशुधन उत्पादन में पर्यावरणीय व स्वास्थ्य समस्याएं: भोजन प्रणाली में प्रदूषण." अमेरिकन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ 94.10: 1703-709. वेब. 5 फ़रवरी 2011. <http://ase.tufts.edu/gdae/pubs/rp/AAI_Issue_Brief_2_1.pdf Archived 2011-09-26 at the Wayback Machine
15. ↑ ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ता पशुधन में संशोधन के लिए कंगारू बैक्टीरिया पर शोध कर रहे हैं

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 4, April 2017

16. ↑ डर्नर, जस्टिन डी. विलियम के. लौएनरुथ, पॉल स्टैप व डेविड जे. ऑगस्टाइन. "उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी ग्रेट मैदानों में घास के मैदानों के पक्षियों के आवास के लिए पारिस्थितिकी तंत्र के इंजीनियर्स के रूप में पशुधन." रैंगेलैंड पारिस्थितिकी और प्रबंधन 62.2 (2009): 111-18. वेब ऑफ साइंस. वेब. फरवरी 2011.
17. ↑ "सीआरएस रिपोर्ट फॉर कौंग्रेस: कृषि: शब्दों, प्रोग्राम तथा नियमों की शब्दावली, 2005 संस्करण - ऑर्डर कोड 97-905" (PDF). मूल (PDF) से 12 फ़रवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 मई 2011.